12-8-2000

स्व और सर्व प्रति विघ्न-विनाशक, सिद्धि नायक बन उड़ते चलो

आज बापदादा के पास सन्देश लेकर जाना हुआ। बापदादा दूर से ही बाँहें पसार ''आओ बच्ची, आओ बच्ची'' कहकर मिलन मना रहे थे। हम भी बाबा की बाँहों में समा गई। जैसे नदी सागर में समा गई। वह लवलीन स्थिति तो अति प्यारी, अति न्यारी है। आप सब भी एक सेकण्ड के लिए उस अनुभव में खो जाओ तो बहुत मजा

आयेगा। उसके बाद बाबा बोले, बच्ची क्या सन्देश लाई हो ? मैंने कहा, बाबा आजकल तो आपकी दी हुई बेहद के स्थान की गिफ्ट (देहली जमीन) की ही चर्चा हो रही है। भण्डारी तो आप भरते ही हो और आगे भी आपने कहा है, आता जाए और लगाते जाओ। तो प्लैन बहुत अच्छा बेहद का बना है, बनाने वालों में भी उत्साह अच्छा है। बाबा मुस्कराते हुए बोले, उमंग तो रहना ही चाहिए, तब ही स्थान में भी वह वायब्रेशन भरता है। मेरे चारों ओर के भारत व विदेश के ढेर बच्चों की बूंद-बूंद से यह सेवा के स्थान का तलाव भर रहा है और भरता ही रहेगा। सबके पास अपनी राजधानी के स्थान का प्यार है, उमंग है।

फिर हमने देहली जमीन के फाउण्डेशन का प्रोग्राम बताया। बाबा बोले – बच्चे बहुत अच्छा प्लैन बनाया है कि सर्व के सहयोग से सर्व कार्य सहज हो ही जाना है।

उसके बाद बाबा को सुनाया कि आजकल भारत में विशेष फार्म भराने की सेवा का उमंग बहुत अच्छा है। सब खूब बिजी रहते। बाबा बोले, बच्चे ईश्वरीय कार्य को वरदान है जो भी सेवा करेंगे उसमें सफलता तो मिलनी ही है। तो भारत वालों ने साइन कराने की सेवा में सफलता अच्छी प्राप्त की है और मेहनत भी खुशी से की है। बापदादा भी चारों ओर के दृश्य देखते हर्षित होते रहते हैं और दिल से मुबारक भी देते रहते हैं।

फिर मैंने फारेन वालों की सर्विस का समाचार सुनाया कि कैसे सभी ग्रुपस में रिट्रीट करते स्व-उन्नति और सेवा के प्लैन बना रहे हैं। बाबा बोले – फारेन भारत से कम नहीं तो भारत फारेन से कम नहीं है। जहाँ तहाँ बाप से प्यार, सेवा से प्यार है इसलिए आगे बढ़ते जाते हैं और नये-नये देशों में भी भिन्न-भिन्न लोगों की सेवा का प्लैन बहुत अच्छा बनाते रहते हैं। बापदादा देखते रहते हैं कि कैसे युक्ति से, युक्तियुक्त रीति से सर्व धर्म की आत्माओं की सेवा कर रहे हैं। बापदादा तो यही देखते कि बच्चे सेवा से सर्व की दुआयें बहुत जमा करते रहते हैं। जो दुआयें उन्हें अपने पुरुषार्थ में भी बहुत सहयोग दे रही हैं। बाबा तो 'वाह मेरे लाडले बच्चे वाह', यही गीत गाते रहते हैं।

हमने देखा बापदादा भारत चाहे विदेश के बच्चों की सेवा देख बहुत-बहुत स्नेह

मूर्त से हर बच्चे को दिल ही दिल में प्यार कर रहे थे और ऐसे प्यार में समा गये जो कुछ समय तो मैं देखते ही रह गई।

बाद में वर्तमान समय राखी का उत्सव सब तरफ बहुत उत्साह से हो रहा है, वह समाचार सुनाया। तो बाबा बोले – हिम्मते बच्चे मददे बाप, बच्चों की मुहब्बत से मेहनत देख बापदादा भी बच्चों पर बलिहार जाता है और स्नेह से थकावट मिटाता रहता है। राखी पवित्रता का फाउन्डेशन है ही लेकिन साथ-साथ समय समीप होने कारण बापदादा हर एक बच्चे को दृढ़ संकल्प की राखी बाँध रहे हैं कि अब स्व और सर्व के प्रति 'विघ्न-विनाशक, सिद्धि नायक' बन आगे उड़ते जाओ। बीती को बिन्दी लगाओ और वर्तमान के हर संकल्प, समय, शक्तियों को जमा करते जाओ क्योंकि जमा करने का समय बहुत कम है। **जमा का खाता बढ़ाना - यही तीव्र पुरुषार्थ की विधि है, उससे ही डबल लाइट बन सहज उड़ती कला का अनुभव करेंगे।** बस, अब वेस्ट खत्म और बेस्ट का खाता बढ़ाना ही है। ऐसे दृढ़ संकल्प की राखी स्वयं को और साथियों को बांधो। बाकी बापदादा आज बच्चों पर बहुत-बहुत खुश थे। और सर्व को सदा खुशी का वरदान दे रहे थे। अच्छा-ओम् शान्ति।